विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 23 : अंक 50 : नई दिल्ली : 9-15 मार्च 2018

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण पश्चिम ओड़िशा में सानंद सुखसातापूर्वक यात्रायित हैं। अहिंसा यात्रा अत्यंत प्रभावक रूप में गतिमान है। पश्चिम ओड़िशा के न केवल तेरापंथ समाज अपितु जैनेतर समाज में भी पूज्यप्रवर के प्रति विशेष भक्ति का भाव देखने को मिल रहा है। प्रातः करीब चार बजे से लेकर रात लगभग नौ बजे तक दर्शनार्थियों के आने का तांता लगा रहता है। हजारों लोग अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार कर रहे हैं तो आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर कई जैनेतर लोग तेरापंथ की सम्यक्त्व दीक्षा (गुरुधारणा) स्वीकार कर रहे हैं। विहार के दौरान भी मार्गवर्ती गांवों में जैनेतर जनता का आचार्यप्रवर के प्रति आकर्षण विशेषतया दृष्टिगोचर होता है। यों कहा जा सकता है कि ओड़िशा का यह क्षेत्र महाश्रमणमय बना हुआ है। पूज्यप्रवर आगामी २ अप्रेल को आंध्रप्रदेश की सीमा में पावन प्रवेश करेंगे। इस राज्य के विशाखापट्टनम् में १८ अप्रेल को अक्षय तृतीया तथा २४ व २५ अप्रेल को क्रमशः पूज्यप्रवर के जन्मोत्सव और पट्टोत्सव का भव्य आयोजन होगा।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ओड़िशा में

दूसरों का भला करो, तुम्हारा भला स्वतः होगा

२८ फरवरी। कांटाबांजी प्रवास का दूसरा दिन। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का वक्तव्य हुआ। आचार्यप्रवर के पदार्पण के उपरान्त महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कांटाबांजीवासियों को पूज्यप्रवर के प्रवास का भरपूर लाभ उठाने की प्रेरणा दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'अर्हत स्वयं तीर्ण होते हैं और दूसरों को तारने वाले होते हैं। स्वयं बुद्ध होते हैं और दूसरों को बोध देने वाले होते हैं। स्वयं मुक्त होने वाले होते हैं और दूसरों को मुक्त करने वाले होते हैं। जीवन में आत्मकल्याण के साथ परकल्याण का भी महत्त्व होता है। मनुष्य स्वोपकार के साथ परोपकार भी करने का प्रयत्न करे। परोपकार की पृष्ठभूमि में यह बात भी रहे कि अपनी ओर से किसी को कष्ट न पहुंचे।

किसी को उन्मार्ग से सन्मार्ग पर लाना आध्यात्मिक दृष्टि से बड़ा उपकार होता है। दूसरों को संसार सागर से पार लगा देना परम उपकार होता है। किसी भूखे को रोटी खिलाना, अनाश्रय को मकान दिलाना, प्यासे को पानी पिलाना आदि भी उपकार होता है, किन्तु वह कुछ समय का उपकार होता है। किसी को कल्याण के मार्ग पर लाना बड़ा उपकार होता है। जो दूसरों का भला करता है, वह मानों अपना भला कर लेता है।

संसारपक्ष में पश्चिम ओड़िशा से संबंधित समणी संगीतप्रज्ञाजी ने आचार्यप्रवर के अभिनंदन में अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त करते हुए ओड़िया भाषा में गीत का संगान किया। ओड़िशा प्रान्तीय तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष श्री श्रीनिवास जैन, स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती ममता जैन, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री विकास जैन और तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री घासीराम जैन ने अपनी अभिव्यक्ति के द्वारा पूज्यप्रवर का अभिनन्दन किया। तेरापंथ कन्या मंडल की कन्याओं ने पूज्यप्रवर के अभिनन्दन में गीत प्रस्तुत किया।

विद्यार्थी सम्मेलन का आयोजन

आज मध्याह्न में पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में विद्यार्थी सम्मेलन आयोजित हुआ। कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए परमपूज्य आचार्यप्रवर ने कहा--'आदमी के जीवन में ज्ञान का परम महत्त्व होता है। ज्ञान से बढ़कर कोई पवित्र वस्तु नहीं होती। विद्या संस्थान ज्ञान प्रदान करने वाले संस्थान होते हैं, मानों सरस्वती के मंदिर होते हैं। जहां शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को ज्ञान दिया जाता है। पुस्तकीय ज्ञान का बड़ा महत्त्व है। पुस्तकीय ज्ञान के साथ शिक्षक अपने जीवन की पोथी से भी अर्थात् अपने आचार और व्यवहार से भी विद्यार्थियों को अच्छा ज्ञान दे सकते हैं। भूगोल, खगोल, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि लौकिक विद्या के विषय हैं। अध्यात्म विद्या के बारे में भी विद्यार्थियों को कुछ जानकारी दी जाती रहे तो वह कल्याणकारी सिद्ध हो सकती है। विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा दी जाए कि वे चोरी न करें, गलत कार्य न करें, लड़ाई-झगड़ा न करें। उनमें ज्ञान का विकास हो, उनका चरित्र अच्छा रहे, उनका जीवन संयम से युक्त हो तो एक अच्छी भावी पीढ़ी का निर्माण हो सकता है।'

कार्यक्रम में सेंट फ्रांसिस जेवियर्स स्कूल तथा लायंस पब्लिक स्कूल के प्रबन्धक, शिक्षक, विद्यार्थी आदि विशेष रूप से उपस्थित थे। उन्होंने पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए। पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुनि योगेशकुमारजी का वक्तव्य हुआ।

सेंट फ्रांसिस जेवियर्स स्कूल के प्रबन्धक श्री रोहित अग्रवाल ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणों में वंदन करता हूं और विद्यालय परिवार की ओर से अभिनन्दन करता हूं। आप गांव-गांव में अहिंसा और नैतिकता का बिगुल बजाते हुए प्राणी-प्राणी में प्रेमरस विकसित कर रहे हैं। आपके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने के लिए मेरी स्कूल के विद्यार्थी सदैव तत्पर रहेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।'

लायंस पब्लिक स्कूल के प्राचार्य श्री वी.वी.आर.मूर्ति ने कहा--'मैं परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का लायंस पब्लिक स्कूल के प्रबन्धन, समस्त शिक्षकों और विद्यार्थियों की ओर से सादर अभिनन्दन करता हूं। गुरुजी! मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हम आपके द्वारा बताए गए रास्ते पर पूर्ण निष्ठा के साथ चलेंगे और विद्यार्थियों को भी उसकी शिक्षा देंगे ताकि वे अच्छे इंसान बनें और देशहित में कार्य करें।'

कार्यक्रम के अंत में कांटाबांजी तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री रायचंद जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री अजय जैन ने किया।

अग्रवाल सम्मेलन की समायोजना

अपराह्न में आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में अग्रवाल सम्मेलन का समायोजन हुआ। अग्रवाल समाज के सैंकड़ों लोगों को संबोधित करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'मनुष्यों का समूह समाज होता है और अनेक परिवारों का संगठन भी एक समाज हो जाता है। स्वस्थ समाज प्रशस्त होता है। रुग्ण समाज अच्छा नहीं होता। स्वस्थ और रुग्ण समाज के संदर्भ में चार बाते हैं--

१. जिस समाज में नशा व्याप्त हो गया, वह एक दृष्टि से रुग्ण समाज है। शादियों में या अन्य कार्यक्रमों में शराब चलती हो तो वह एक विचार की बात हो जाती है। शराब नुक्सानदेह मानी जा रही है तो उससे बचने का प्रयास भी होना चाहिए। जिस समाज में नशा नहीं होता, वह स्वस्थ समाज होता है।

२. जिसके परिवारों में शांति है, वह स्वस्थ समाज है। परिवारों में कलह, लड़ाई-झगड़ा चलता है, यदा-कदा तलाक की बात, दहेज की समस्या, कहीं बहू को जलने/जलाने की बात आदि की बातें होती हैं तो वह समाज के लिए शोभा की बात नहीं होती। परिवार स्वर्ग के समान भी हो सकता है और नरक का उदाहरण भी बन सकता है। परिवारों में कलह और असहिष्णुता न रहे, शांति रहे। कदाचित् कोई बात हो जाए तो उसे बातचीत आदि के द्वारा समाहित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

३. जिस समाज में ईमानदारी है, वह समाज स्वस्थ है। समाज में बेईमानी चलती है तो वह समाज रुग्ण है। भले व्यापारी हो, उद्योगपति हो, नौकरी करने वाला हो, कार्य में ईमानदारी है तो व्यक्ति भी स्वस्थ है और समाज भी स्वस्थ है। यदि बेईमानी है तो फिर व्यक्ति भी बीमार और समाज की भी अस्वस्थता की बात हो जाती है।

४. समाज और परिवारों में धार्मिकता रहनी चाहिए। साधु-संतों से संपर्क रहे, उनका व्याख्यान सत्संगत हो, अच्छी पुस्तकों का पठन हो, अन्य धार्मिक गतिविधियां यथासंभव चलती रहें तो समाज स्वस्थ रह सकता है और उससे समाज को पोषण भी प्राप्त हो सकता है। चौबीस घंटों में से कुछ समय साधना में लगाना चाहिए। जैसे दिन-रात में साठ घड़ियां बताई गई हैं। चौबीस मिनिट की एक घड़ी होती है। इस प्रकार चौबीस घंटों की साठ घड़ियां हो जाती हैं। इठ्यावन घड़ी काम की, दो घड़ी राम की। इठ्यावन घड़ी घर की, दो घड़ी हर की। इठ्यावन घड़ी कर्म की, दो घड़ी धर्म की। इठ्यावन घड़ी जीव की, दो घड़ी शिव की। इठ्यावन घड़ी पाप की, दो घड़ी आपकी। प्रतिदिन दो घड़ी का समय (एक मुहूर्त) भी धर्म में लगाना अच्छी पुस्तकों को पढ़ना, ध्यान करना, साधना करना, सामायिक करना आदि भी समाज को स्वस्थ बनाने वाली बातें हो सकती हैं। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी परिवारों में शनिवार की सायं सात से आठ बजे के बीच सामायिक हो जाए तो एक अच्छा क्रम हो सकता है। इस प्रकार नशामुक्त, कलहमुक्त, ईमानदारीयुक्त और धार्मिकतायुक्त समाज स्वस्थ होता है। इसके विपरीत नशायुक्त, कलहयुक्त, अनैतिकतायुक्त और अधार्मिकतायुक्त समाज रुग्ण होता है।'

कांटाबांजी-ओड़िशा का अग्रवाल समाज उपस्थित है। हरियाणा के कितने परिवार वर्षों से ओड़िशा में बसे हुए हैं। अग्रवाल समाज में भी खूब अच्छा रहे, खूब धार्मिकता रहे। अच्छे विचार, अच्छा आचार और अच्छे संस्कार रहने चाहिए। नई पीढ़ी में अच्छे संस्कार रहें, खानपान में मांस-मच्छी, अंडे आदि का प्रचलन न हो, इस दृष्टि से जागरूकता रहे तो परिवार और समाज अच्छा रह सकता है। अग्रवाल समाज खूब अच्छा रहे, मंगलकामना।'

पूज्यप्रवर ने उपस्थित लोगों को अहिंसा यात्रा के संकल्प भी करवाए। कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुनि कुमारश्रमणजी का वक्तव्य हुआ। कांटाबांजी तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री रायचंद जैन तथा मंत्री श्री विवेक जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

अग्रवाल सभा ट्रस्ट के सचिव श्री संजय अग्रवाल ने कहा--'यह परम सौभाग्य का अवसर है कि करीब अड़तालीस वर्षों बाद हमें कांटाबांजी में तेरापंथ के आचार्य शिरोमणि आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन प्राप्त हो रहे हैं। इस सौभाग्य के प्रदाता संत शिरोमणि आचार्यश्री महाश्रमणजी का मैं समग्र अग्रवाल समाज की ओर से अभिनन्दन करता हूं। आचार्यश्री एवं उनके संघ के आगमन से यह नगरी पावन हो गई है। हम वाकई सौभाग्यशाली हैं कि हमें आपका इतना लंबा सान्निध्य प्राप्त हो रहा है। आचार्यश्री! हमें आपका जो आदेश प्राप्त होगा, उसका पालन करने का हम निरंतर प्रयास करेंगे। आप अहिंसा एवं अनुशासन के साक्षात् उदाहरण हैं। आपका एक-एक शब्द अनुकरणीय है।'

आज प्रातः कांटाबांजी मुस्लिम समुदाय के इमाम मोहम्मद शहाबुद्दीन राजवी ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया। उन्होंने पूज्यप्रवर के समक्ष अपने भाव अभिव्यक्त करते हुए कहा--'आचार्यश्री! आप अहिंसा यात्रा के जरिए इंसानियत का पैगाम लेकर यहां तशरीफ लाए हैं। मैं पूरी मुस्लिम जमात की ओर से आपका इस्तकबाल करता हूं। आपका पैगाम पूरी दुनिया में अमन-चैन लाएगा।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में २६ मार्च से प्रारम्भ हुआ मर्यादावली वाचन का उपक्रम आज परिसम्पन्न हुआ। इस उपक्रम के अंतर्गत तीनों दिन मध्याह्न करीब दो बजे से तीन बजे तक पूज्यप्रवर ने साधु-साध्वियों की उपस्थिति में मर्यादावली का सोच्चारण वाचन किया।

आध्यात्मिक रंगों से सराबोर हुए कांटाबांजीवासी

१ मार्च। फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी, पूर्णिमा। होली का त्यौहार। कांटाबांजी प्रवास का तीसरा दिन। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः कांटाबांजी के कुछ अक्षम लोगों को दर्शन देने हेतु उनके घरों में पधारे। पूज्यप्रवर को अपने आंगन में पाकर अक्षम लोग और उनके परिजन धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। मार्ग में कई घरों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास उनसे संबंधित जैन एवं जैनेतर लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व मुख्यनियोजिकाजी का वक्तव्य हुआ। पूज्यप्रवर के पदार्पण के पश्चात् महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में होली के संदर्भ में कहा--'आज होली का दिन है। होली के दिन के लिए कहा जाता है कि यह रंगों का उत्सव है। मन का हर कोना आनंद के रंगों से रंग जाए यह जरूरी है। होली के बारे में कहा जाता है कि यह अंतर्राष्ट्रीय त्यौहार है। कई देशों में अपने-अपने ढंग से मनाया जाता है। आज के दिन लोग होलिका भी जलाते हैं। होली जलाने के पीछे अनेक किंवदंतियां हैं। मैं उनकी चर्चा नहीं करूंगी लेकिन एक बात बताना चाहूंगी कि होलिका जलाना वायुमंडल को कीटाणुमुक्त बनाने का भी एक साधन माना जाता है। अपेक्षा यह है कि आतंक और अत्याचार के कीटाणुओं, जो आज देश और समाज को बरबाद कर रहे हैं, को जलाने के लिए नए ढंग से इस होली के त्यौहार को मनाने की बात सोची जाए। होली के प्रसंग में जैन परंपरा में रंगों का ध्यान कराया जाता है। नमस्कार महामंत्र के साथ पांच रंग का ध्यान कराया जाता है। लोग रंगों से खेलते हैं, यदि इन रंगों का ध्यान कर लिया जाए तो अंदर से आनंद निकलेगा। कांटाबांजीवासियों का तो परम सौभाग्य है कि परम पूज्य आचार्यप्रवर के मंगल सान्निध्य में होली पर्व, जिसका महत्त्व लौकिक और लोकोत्तर दोनों दृष्टियों से हो सकता है, मनाने का अवसर मिला है। आचार्यप्रवर जो अध्यात्म का रंग उनके लिए बांटे, उस रंग से वे अपने आपको रंगकर आत्मालाह्‌द का अनुभव करें।'

साध्वीवर्याजी ने अपने वक्तव्य में श्रद्धा, विश्वास और संयम के विकास की प्रेरणा दी।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'साधु के लिए सहन करने की साधना अभिलषणीय होती है। साधु के सामने प्रतिकूल परिस्थितियां आ सकती हैं। कोई साधु पर आक्रोश या प्रहार कर सकता है। उसके लिए कटु वचनों का प्रयोग कर सकता है। कभी-कभी भयावह स्थितियां भी सामने आ सकती हैं। साधु को ऐसी परिस्थतियों में सम रहने का अभ्यास करना चाहिए। मुनि को पृथ्वी के समान सहनशील होना चाहिए। पृथ्वी को सहन करने की दृष्टि से उदाहृत किया जा सकता है। पृथ्वी पर थूके, प्रहार करे तो भी पृथ्वी किस प्रकार सह लेती है। साधु के चित्त में प्रसन्नता व शांति रहनी चाहिए। गुस्सा साधु के लिए शोभास्पद नहीं होता। सामूहिक जीवन में परस्पर सहने का अभ्यास रहना चाहिए। पारस्परिक कलह को अवसर नहीं मिलना चाहिए। उपशांत कलह की उदीरणा भी नहीं होनी चाहिए। औचित्यानुसार यदा-कदा बड़ों को भी झुकना चाहिए। इसको यों भी कहा जा सकता है कि सहने वाले बड़े होते हैं। हां, झुकने और न झुकने में द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव का विवेचन भी अपेक्षित होता है। हर कहीं झुकना भी अच्छा नहीं होता।

आचार्यप्रवर कभी किसी को उलाहना दे सकते हैं। उसे भी शांति और विनय भाव से स्वीकार करना चाहिए। आचार्य ही नहीं, अपने से बड़ों के उलाहने को भी समभाव से सहन करना चाहिए। जो सहता है, वह रहता है। जो सहन नहीं कर सकता, अविनीत होता है, वह दुःखी हो सकता है। सुविनीत सुखी होता है। सहन करने का अर्थ है कि हम गुस्से को जला डालें।

आज होली का प्रसंग है। यदि जलाना ही है तो भीतर के कषायों को भी जलाने का प्रयास करें। कषाय दग्ध हो जाएंगे तो भीतर की निर्मलता बढ़ जाएगी। होली से कषायों को जलाने की प्रेरणा लेकर कल्याण की

दिशा में आगे बढ़ें, यह काम्य है।'

आचार्यप्रवर ने होली के प्रसंग में चैतन्य केन्द्रों पर रंगों के ध्यान के साथ नमस्कार महामंत्र का जप करवाया।

पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के पश्चात् समणीवृंद, साध्वीवृंद और मुनिवृंद की उस प्रवचन से संबंधित जिज्ञासाओं को समाहित किया। तत्पश्चात् आचार्यप्रवर ने साधु-साध्वियों से कुछ प्रश्न पूछे। साधु-साध्वियों ने अपने-अपने ज्ञानानुसार उनके उत्तर प्रस्तुत करने का प्रयास किया। इस प्रकार एक रोचक और आनंददायक दृश्य दृश्यमान हो उठा। साधु-साध्वियों व समणी की जिज्ञासाएं एवं पूज्यप्रवर द्वारा प्रदत्त उनके समाधान पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'कांटाबांजी में अच्छा प्रवास हुआ। यहां तीन दिनों का प्रवास अब सम्पन्न होने जा रहा है। कार्यक्रम में करीब ११.११ बजे से पूज्यप्रवर ने कांटाबांजीवासियों को सम्यक्त्व दीक्षा प्रदान की।

राज्यसभा सांसद श्री एवी स्वामी ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महापुरुष के दर्शन कर स्वयं को धन्य मानता हूं। मैंने जब आपके बारे में सुना तो अपने-आपको नहीं रोक सका और भुवनेश्वर से यहां आ गया।

पूज्यप्रवर ने चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी का वाचन करते हुए साधु-साध्वियों को पावन संबोध प्रदान किया। बालमुनि प्रिंसकुमारजी, मुनि नमनकुमारजी, मुनि पार्श्वकुमारजी, साध्वी विशालप्रभाजी और साध्वी आदित्यप्रभाजी ने लेखपत्र उच्चरित किया। कांटाबांजी तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री रायचंद जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कांटाबांजी तेरापंथ कन्या मंडल ने होली के संदर्भ में अपनी प्रस्तुति दी।

आज मध्याह्न में बलांगीर क्षेत्र के सांसद श्री कलिकेश नारायण सिंह देव ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

होली पर 'महाश्रमण-भक्ति' के रंग में रंगा कांटाबांजी

पूज्यप्रवर का आज का रात्रिकालीन प्रवास तेरापंथ भवन में निर्धारित था। इस हेतु आचार्यप्रवर ने सूर्यास्त के साथ ही 'आलिशान पैलेस' से तेरापंथ भवन की ओर प्रस्थान किया। इसके साथ ही उमड़ आया जनता का सैलाब। कांटाबांजी में करीब एक सौ बीस श्रद्धालु परिवार निवासित हैं, किन्तु आज तो कांटाबांजी के इस मार्ग पर हजारों लोग पूज्यप्रवर की प्रतीक्षा में खड़े थे। पूज्यचरण ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जा रहे थे लोग अपने-अपने घरों तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आगे पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण कर पूज्यप्रवर से पावन आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। मार्गवर्ती लगभग सभी घरों के प्रायः सभी सदस्य मार्ग के परिपार्श्व में अथवा छत पर खड़े थे। हर कोई आचार्यप्रवर की एक झलक पाने को बेताब था। प्रायः सभी जैनेतर घरों के बाहर रंगोलियां, कलश आदि मंगल पदार्थ सजे हुए थे। किसी रंगोली में अहिंसा यात्रा का प्रतीक चिन्ह उकेरा गया था तो किसी में आचार्यप्रवर का चित्र। कहीं 'स्वागतम-सुस्वागतम' अंकित था तो कहीं 'वन्दे गुरुवरम', किन्तु चारों ओर छायी अत्यधिक भीड़ के कारण रंगोलियां आदि आचार्यप्रवर की दृष्टि का विषय नहीं बन पा रहे थे। कोई आचार्यप्रवर के सम्मुख आकर साष्टांग वंदन कर रहा था तो कोई अपने स्थान से करबद्ध नतसिर वंदन कर रहा था। कहीं 'हुलाहुली' का नाद गूंज रहा था तो कहीं 'जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण' का बुलंद घोष।

पूज्यचरण ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जा रहे थे, श्रद्धा-भक्ति का सैलाब भी बढ़ता जा रहा था। अत्यधिक भीड़ के कारण कुछ अव्यवस्थाएं-सी भी होने लगी। कार्यकर्ता लोगों को आचार्यप्रवर के आसपास आने से रोकने लगे, किन्तु भावाभिभूत लोगों को जब आचार्यप्रवर के दर्शन नहीं हो पा रहे थे, वे जबरन कार्यकर्ताओं के बीच से पूज्यप्रवर के सम्मुख पहुंचकर आचार्यप्रवर से आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। आखिर मुनिवृंद को आचार्यप्रवर

के चारों ओर सुरक्षा घेरा बनाना पड़ा। इसके बावजूद आगे बढ़ना कठिन हो रहा था। जैसे-तैसे मार्ग बनाकर मंद गति से आगे बढ़ा जा रहा था। जैन एवं अजैन का भेद करना आज कठिन ही नहीं, असंभव-सा लग रहा था। ऐसा लग रहा था होली त्यौहार में पूरा कांटाबांजी आचार्यश्री महाश्रमणजी के भक्ति के रंग में रंग गया हो।

इन्द्रा चौक पर तो एक नंबर गली, दो नंबर गली और तीन नंबर गली के लोग मानों जाम लगाकर ही खड़े हो गए। तीनों गलियों के लोग पूज्यप्रवर को अपनी-अपनी गली से पधारने की आग्रहपूर्ण प्रार्थना करने लगे। उन्हें समझाना भी कठिन हो रहा था। तीन नंबर गली से पधारना पूर्व निर्धारित था। पूज्यप्रवर ने आखिर एक और दो नंबर गली वाले लोगों को वहीं से मंगलपाठ सुनाया। आसपास के मार्गों के लोग भी वहीं पहुंचे हुए थे। ऐसे में मार्ग बनाना अत्यंत कठिन हो रहा था। जैसे-तैसे रास्ता बनाने में सफलता प्राप्त हुई और पूज्यप्रवर तीन नंबर गली से पधारे। साध्वी किरणयशाजी के संसारपक्षीय परिजनों की भावना को तृप्त करने हेतु यह मार्ग लिया गया था, किन्तु भारी भीड़ के कारण उनके परिजन पूज्यप्रवर से मंगलपाठ नहीं सुन पाए। पूज्यप्रवर दो नंबर गली के कुछ हिस्से से होते हुए एक नंबर गली में स्थित तेरापंथ भवन में पधारे। इस प्रकार मात्र करीब १.२ कि.मी. के विहार में तेरापंथ भवन पहुंचते-पहुंचते लगभग सत्ताइस मिनिट लग गए। पूज्यप्रवर के भवन में प्रवेश के साथ मानों स्थानीय तेरापंथ समाज का उत्साह और भी वृद्धिंगत हो गया। 'स्वागतम-सुस्वागतम्' के लयबद्ध और बुलंद घोषों से पूरा भवन और आसपास का क्षेत्र गुंजायमान हो उठा।

पूज्यप्रवर के त्रिदिवसीय कांटाबांजी प्रवास में हजारों जैनेतर लोग भी पूज्यप्रवर के दर्शन से लाभान्वित हुए। प्रायः हर समय आचार्यप्रवर के आसपास का स्थान जनाकीर्ण बना रहता। चरणस्पर्श के लिए प्रातः और सायंकाल जैन एवं जैनेतर लोगों में होड़-सी मच जाती और इस हेतु दोनों समय लम्बी कतार लग जाती। जैनेतर लोगों के दिलों में भी पूज्यप्रवर की मूरत भगवान रूप में विराजमान थी। पहली बार दर्शन करने वाला व्यक्ति पूज्यप्रवर के व्यक्तित्व से इतना प्रभावित होता कि दूसरी बार अपने स्वजनों, मित्रों आदि को साथ लेकर आ रहा था। कई लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर अपनी बुराइयों को छोड़ने का संकल्प स्वीकार किया। पूरे शहर में तीन दिनों तक आचार्यप्रवर और अहिंसा यात्रा की चर्चा श्लाघात्मक रूप में छाई रही। ओड़िया समाज, ब्राह्मण समाज, गुजराती समाज, मारवाड़ी युवा मंच, कांटाबांजी भागवत गोष्ठी, मारवाड़ी महिला समिति, मारवाड़ी महिला मंडल प्रगति शाखा आदि समाजों व संस्थाओं से जुड़े हुए लोगों ने पूज्यप्रवर की उपासना का अवसर भी प्राप्त किया।

जन भावना को परितृप्त करते हुए जनता के भगवान का बंगोमुण्डा में मंगल प्रवेश

२ मार्च। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः कांटाबांजी से बंगोमुण्डा की ओर प्रस्थान किया। तेरापंथ भवन के परिपार्श्व में 'महाश्रमण चौक' हेतु निर्धारित स्थान के निकट पूज्यप्रवर ने मंगलपाठ सम्मुचारण किया। पूज्यप्रवर ने करीब आधा किलोमीटर की अतिरिक्त यात्रा कर कांटाबांजी के कुछ अक्षम लोगों को उनके घर में पधारकर दर्शन दिए। आचार्यप्रवर के अनुग्रह में अभिस्नात लोग एवं उनके परिजन अतिशय हर्षविभोर थे। पूज्यप्रवर जिस किसी मार्ग से पधार रहे थे, वहां लोगों की भीड़ उमड़ती जा रही थी। लोग अपने-अपने घरों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के बाहर आचार्यप्रवर की प्रतीक्षा में खड़े थे। जैन साधुचर्या से प्रायः अपरिचित अथवा कम परिचित, किन्तु भक्तिमान जैनेतर लोगों ने स्थान-स्थान पर रंगोलियों, कलश, फूल, नारियल आदि सजा रखे थे। आचार्यप्रवर उनके समीप रुक-रुककर उन्हें मंगलपाठ सुना रहे थे और आशीर्वाद प्रदान कर उनकी भावना को परितृप्त कर रहे थे। चारों ओर श्रद्धा-भक्तिमय दृश्य दृश्यमान बना हुआ था। ऐसा लग रहा था आचार्यप्रवर जिन मार्गों पर गति कर रहे थे मानों उनके आसपास श्रद्धालु परिवार ही निवासित हों। गत कल उमड़ी अत्यधिक भीड़ के कारण हुई कुछ अव्यवस्था को देखते हुए आज मुनिवृंद और कार्यकर्ता सजग थे, इसलिए जनता की विराट उपस्थिति के बावजूद लोग आचार्यप्रवर के दर्शन और आशीर्वाद से लाभान्वित

बन पा रहे थे। इस प्रकार कांटाबांजी के बाहरी भाग तक पहुंचने में करीब डेढ़ घंटे का समय लग गया। सूर्य का आतप प्रखरता धारण करता जा रहा था और आज का विहार भी प्रलंब था, किन्तु आचार्यप्रवर अपने कष्टों की परवाह किए बिना जन-जन का आतप हरते हुए गतिमान थे।

कांटाबांजी के बाहरी भाग में झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोग भी बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित बन रहे थे। उन लोगों ने भी पूज्यप्रवर के स्वागत में लौकिक मंगल पदार्थ सजा रखे थे। महिलाएं 'हुलाहुली' के द्वारा अपनी भावांजलि अर्पित कर रही थीं तो कई पुरुष पूज्यप्रवर के समक्ष आकर साष्टांग वंदन कर रहे थे। आचार्यप्रवर की आशीषवृष्टि उन पर होती जा रही थी।

आज होली पर्व के अंतर्गत 'धुलण्डी' का दिन था। इसलिए कई लोग होली खेलने में मग्न थे, किन्तु उन्हें जब पूज्यप्रवर के पदार्पण की अवगति प्राप्त हो रही थी तो वे झुंड रूप में रंगों और गुलाल से पुते हुए अपने मस्तकों को झुकाकर और हाथों को जोड़कर पूज्यप्रवर को वंदन कर रहे थे। पूज्यप्रवर उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान कर रहे थे।

पूज्यप्रवर संबद्ध लोगों की प्रार्थना पर मार्ग के समीपस्थ 'बाबा नथमल मंदिर' परिसर के भीतर पधारे, किन्तु मार्गस्थ काई के कारण पूज्यप्रवर मंदिर में नहीं पधार पाए और बाहर से ही मंगलपाठ उच्चरित किया। मार्गस्थ श्री श्यामजी मंदिर से संबंधित लोगों ने पूज्यप्रवर से मंदिर में पधारने की प्रार्थना की। पूज्यप्रवर इस हेतु उसके द्वार के निकट पधारे, किन्तु हरियाली पूज्यप्रवर के मंदिर पदार्पण में बाधक बन गई। आचार्यप्रवर ने मंदिर परिसर के बाहर आसीन होकर मंगलपाठ उच्चरित किया। महिलाओं ने पूज्यप्रवर के स्वागत में गीत का संगान किया।

'डामन-डंगा' गांव के लोग पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ बड़ी संख्या में खड़े थे। पूज्यप्रवर ने उनके निकट अपने चरण थामकर 'मानव जीवन पाकर तुमने क्या किया' गीत का आंशिक संगान करते हुए उन्हें पावन प्रतिबोध प्रदान किया। पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार मुख्यमुनिश्री ने ग्रामीणों को ओड़िया भाषा में संकल्पत्रयी स्वीकार करवाई। महिलाओं ने 'हुलाहुली' के द्वारा पूज्यचरणों में अभिवन्दना समर्पित की। घरों के बाहर सजे हुए रंगोलियां, कलश, नारियल, फूल आदि लौकिक मंगल पदार्थ ग्रामीणों की आचार्यप्रवर के प्रति भक्ति-भावना को दर्शा रहे थे। 'कंदबहाल' में भी ग्रामीण पूज्यप्रवर के स्वागत में रंगोली, कलश, नारियल आदि सजाकर खड़े थे। पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। आचार्यप्रवर ने मार्गवर्ती बाबा मंदिर में पधारकर मंगलपाठ उच्चरित किया। मंदिर के विषय में बताया गया कि इस राह से गुजरने वाले वाहनों के यात्री यहां नारियल चढ़ाकर ही जाते हैं। लोगों की मान्यता है कि ऐसा न करने से उन्हें दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है। मंदिर के समीप स्थानीय विधायक हाजी मोहम्मद अयूब खान ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

पूज्यप्रवर का बंगोमुण्डा पदार्पण बंगोमुण्डा के जैन एवं जैनेतर समाज को हर्षाभिभूत बनाए हुए था। चिलचिलाती धूप में भी सैंकड़ों लोग आचार्यप्रवर की प्रतीक्षा में खड़े थे। जनता की उपस्थिति उत्साह और उल्लास को देखकर यह अंदाज लगाना मुश्किल था कि बंगोमुण्डा में ५५ ही तेरापंथी परिवार निवासित हैं। बंगोमुण्डा सरपंच श्री सुशांत जोशी, प्रदेश कांग्रेस के सह सचिव श्री सुधांशु दास, पूर्व जिला पार्षद सदस्य श्री देव सर्राफ आदि ने आचार्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। मुरिबहाल के ब्लॉक चेयरमेन श्री हंसराज जैन एवं बंगोमुण्डा ब्लॉक के वाइस चेयरमेन श्री मामराज जैन ने अपने आराध्य का आस्थासिक्त अभिनन्दन किया। धुलण्डी के दिन चारों ओर श्रद्धा-भक्तिमय रंग छाया हुआ था। बुलंद जयघोष जनता के उल्लास के अभिव्यक्ति के साधन बने हुए थे। पूज्यप्रवर चिलचिलाती धूप में करीब १६.० कि.मी. का प्रलम्ब विहार कर करीब बारह बजे बंगोमुण्डा के बाहरी भाग में स्थित पंचायत समिति जूनियर कॉलेज में पधारे। आचार्यप्रवर का बंगोमुण्डा का द्विदिवसीय प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के उद्बोधन हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में भौतिक इच्छाओं का परिमाण करने की प्रेरणा प्रदान की।

बंगोमुण्डा तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री बजरंगलाल जैन, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री अशोक जैन, ओड़िशा प्रान्तीय तेरापंथी सभा के मंत्री श्री केशवनारायण जैन और बंगोमुण्डा ब्लॉक वाइस चेयरमेन श्री मामराज जैन और बंगोमुण्डा अग्रवाल सभा के अध्यक्ष श्री किशन अग्रवाल ने आचार्यप्रवर के अभिनन्दन में आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी।

बंगोमुण्डा तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ कन्या मंडल ने पूज्यप्रवर के स्वागत में गीत का संगान करते हुए संकल्पों का उपहार श्रीचरणों में अर्पित किया। तेरापंथ युवक परिषद ने गीत के माध्यम से अपने आराध्य का अभिनन्दन किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में अपनी प्रस्तुति दी।

बंगोमुण्डा सरपंच श्री सुशांत जोशी ने कहा--'बंगोमुण्डा में आज महासंत आचार्यश्री महाश्रमणजी का साक्षात् भगवान के रूप में आगमन हुआ है। आपके चरणरज को पाकर हमारा गांव और हमारा यह अंचल धन्य हो गया। आपके आगमन से ही हमारे अंचल में बड़ा परिवर्तन हो जाएगा, ऐसा मेरा विश्वास है। आपने हम सभी को आशीर्वाद प्रदान कर हम सभी पर जो उपकार किया है, उसका ऋण तो हम आजीवन नहीं चुका पाएंगे। आपके आगमन से इस क्षेत्र के लोगों में धर्म के संस्कार आएंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।'

स्थानीय विधायक हाजी मोहम्मद अयूब खान ने कहा--'होली के पावन त्यौहार पर बंगोमुण्डावासियों को आज आचार्यश्री के पदार्पण के रूप में बेशकीमती तोहफा मिला है। आचार्यश्री तेरापंथ धर्मसंघ के ही नहीं, सभी धर्मों के आचार्य हैं। आचार्यश्री से मैं यही प्रार्थना करता हूं कि आप ओड़िशा के अमन-चैन की दुआ करते हुए हम पर अपनी रहमत बनाए रखें।'

पूर्व विधायक श्री संतोष सिंह सलूजा ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी दुनिया भर में अहिंसा की स्थापना का बीड़ा अपने कंधों पर उठाए हुए तीन देशों और भारत के उन्नीस राज्यों में अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। आपकी इस यात्रा से निश्चित रूप से बदलाव आएगा, ऐसा मेरा विश्वास है। ओड़िशा राज्य के आराध्य जगन्नाथ महाराज वर्ष में एक दिन रथयात्रा के माध्यम से दर्शन देने आते हैं और आज इस अहिंसा यात्रा के माध्यम से आप गांव-गांव में पांव-पांव चलकर लोगों को आशीर्वाद ही नहीं दे रहे हैं, अपितु उनका कल्याण भी कर रहे हैं।'

आज सायंकाल दीक्षार्थिनी अंजलि की शोभायात्रा बंगोमुण्डा के विभिन्न मार्गों से होती हुई पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में पहुंची। आचार्यप्रवर ने दीक्षार्थिनी एवं जनमेदिनी को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। रात्रि में पारमार्थिक शिक्षण संस्था के तत्त्वावधान में दीक्षार्थिनी का मंगल भावना समारोह समायोजित हुआ।

अनुग्रह में अभिस्नात हुई जैन-जैनेतर जनता

३ मार्च। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर के बंगोमुण्डा के द्विदिवसीय प्रवास का दूसरा दिन। आचार्यप्रवर प्रातः बंगोमुण्डा गांव के भीतर पधारे तथा गांव में स्थित वयोवृद्ध और अक्षम श्रद्धालुओं के घरों में अथवा उसके आसपास पधार कर उन्हें दर्शन दिए। पूज्यप्रवर का यह अनुग्रह इसमें अभिस्नात लोगों और उनके परिजनों को धन्यता की अनुभूति करवा रहा था। आचार्यप्रवर ने कुछ शोक संतप्त परिजनों के घरों में भी पधाकर परिजनों को आध्यात्मिक संबल प्रदान किया। अनेक जैन एवं जैनेतर घरों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के समीप उनसे संबंधित लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। कई जैनेतर घरों के आगे सजी हुई रंगोलियां, कलश आदि पदार्थ लोगों की आस्थाभिव्यक्ति के माध्यम बने हुए थे। स्थान-स्थान पर ओड़िया समाज की महिलाएं 'हुलाहुली' के द्वारा पूज्यप्रवर का स्वागत करती हुई आचार्यप्रवर को आस्थासिक्त वंदन

कर रही थीं। बंगोमुण्डा ग्राम पंचायत भवन के सामने स्थानीय सरपंच श्री सुशांत जोशी ने पूज्यप्रवर को साष्टांग वंदन करते हुए भवन में पधारने की प्रार्थना की। आचार्यप्रवर ने उन्हें वहीं से मंगलपाठ सुनाया। आचार्यप्रवर ने अनुग्रह करते हुए दीक्षार्थिनी अंजलि के ननिहाल में पधारकर उसे मंगलपाठ सुनाया। आचार्यप्रवर स्थानीय तेरापंथ भवन में पधारे और उसमें भूमि तल का अवलोकन कर वहां कुछ क्षण आसीन हुए। बंगोमुण्डा तेरापंथ कन्या मंडल की कन्याओं ने स्वागत गीत का संगान किया। बंगोमुण्डा तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री बजरंगलाल जैन ने भी अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने संक्षिप्त संबोध प्रदान करते हुए 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का आंशिक संगान किया। बंगोमुण्डा गांव में बने 'तुलसी द्वार' 'महाप्रज्ञ द्वार' और 'महाश्रमण द्वार' पूज्यप्रवर की दृष्टि का विषय बने।

समणी दीक्षा समारोह

परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज आयोज्य समणी दीक्षा समारोह के प्रारम्भ का समय करीब एक बजे निर्धारित था। पूज्यप्रवर मुनिवृंद को साथ लेकर चिलचिलाती धूप में करीब १२.५० बजे प्रवास स्थल से प्रस्थान कर लगभग तीन सौ मीटर दूर स्थित श्री महेन्द्रकुमार जैन की जमीन पर निर्मित विशाल 'संयम समवसरण' में पधारे।

पूज्यप्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में साध्वीवर्याजी ने 'जीवन में त्याग का महत्त्व', मुख्यनियोजिकाजी ने 'दीक्षा क्यों' और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने 'तेरापंथ की दीक्षा प्रणाली' विषय को विवेचित किया। मुख्यमुनिश्री का 'सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र मोक्ष का मार्ग' विषय पर वक्तव्य हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'प्रत्येक प्राणी की आत्मा इस संसार में अनंत, अनादि काल से विद्यमान हैं, परिभ्रमण कर रही है। जैन दर्शन मानता है कि जीव की उत्पत्ति कभी नहीं हुई, वह हमेशा था और हमेशा रहेगा। प्रत्येक प्राणी की आत्मा ने अनंत-अनंत जन्म कर लिए हैं। संसारी अवस्था में इसका जन्म-मरण होता रहता है। जन्म-मरण को दुःख कहा गया। दुःखों से छुटकारा पाने का उपाय है साधना। साधना की सिद्धि के बाद आत्मा सर्व दुःखमुक्त हो जाती है। सिद्धि से पूर्व तक की भूमिका में साधुत्व के पालन से भी काफी दुःखों से छुटकारा मिल सकता है।'

पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन में जैन धर्म, तेरापंथ, साधुचर्या आदि का वर्णन करते हुए प्रसंगवश कई साधु-साध्वियों का परिचय भी प्रस्तुत किया।

पूज्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त दीक्षार्थिनी अंजलि की बहन मुमुक्षु चंदनबाला ने दीक्षार्थिनी का परिचय प्रस्तुत किया। श्री मोतीलालजी जीरावला ने दीक्षार्थिनी के परिजनों द्वारा प्रस्तुत आज्ञापत्र का वाचन किया। तदुपरान्त दीक्षार्थिनी के पिता श्री हरिराम जैन ने आज्ञा पत्र पूज्यप्रवर को समर्पित किया। दीक्षार्थिनी अंजलि ने पूज्यचरणों में समर्पण प्रस्तुत किया। पूज्यप्रवर ने दीक्षार्थिनी के परिजनों की मौखिक आज्ञा प्राप्त की तथा मंगल मुहूर्त में मुमुक्षु अंजलि (केसिंगा) को समणी दीक्षा प्रदान की। तत्पश्चात् आर्षवाणी के उच्चारण के साथ उसे अतीत की आलोचना करवाई। पूज्यप्रवर ने ज्ञान, दर्शन, चारित्र, क्षांति और मुक्ति में वर्धमान रहने का आर्ष आशीर्वाद प्रदान किया। नामकरण संस्कार के अंतर्गत आचार्यप्रवर ने नवदीक्षित समणी को समणी ओजस्वीप्रज्ञा नाम प्रदान किया। पूज्यप्रवर ने दीक्षान्त संबोध प्रदान करते हुए प्रत्येक कार्य में संयम रखने की प्रेरणा दी तथा आचार्यप्रवर के अनुशासन के अंतर्गत साध्वीवर्याजी के संरक्षण में साधना करने का निर्देश भी दिया।

आचार्यप्रवर ने समुपस्थित विशाल जनमेदिनी को अहिंसा यात्रा के संकल्प करवाए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

दीक्षा समारोह में संभागी बनने हेतु ओड़िशा एवं छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों के हजारों लोग पूज्यसन्निधि में पहुंचे। इस कारण विशाल 'संयम समवसरण' भी छोटा पड़ गया। कार्यक्रम में जैनेतर समाज के लोग भी बड़ी तादाद में उपस्थित थे। तेरापंथ की दीक्षा प्रणाली को साक्षात् देखकर वे अभिभूत थे। बंगोमुण्डा का जैन एवं जैनेतर समाज इस समारोह की सफलता हेतु निष्ठापूर्वक जुटा हुआ था। छोटे से गांव में हजारों लोगों हेतु सुन्दर व्यवस्था कर बंगोमुण्डावासी आगंतुकों की प्रशंसा का विषय बने हुए थे।

नई विधा में ग्रासदान संस्कार

कार्यक्रम के उपरान्त पूज्यप्रवर साध्वीवृंद के प्रवास स्थल के भीतर से अपने प्रवास स्थल की ओर पधार रहे थे। साध्वीप्रमुखाजी के अनुरोध पर आचार्यप्रवर साध्वीवृंद के प्रवास स्थल में कुछ क्षण आसीन हुए। मुनि दीक्षा के उपरान्त ग्रास दान का उपक्रम रहता है। जिसमें पूज्यप्रवर नवदीक्षित मुनि/साध्वी को ग्रास (खाद्य सामग्री) प्रदान करते हैं। किसी समय नवदीक्षित समणी को लेखन सामग्री भी प्रदान की जाती थी। पूज्यप्रवर ने इसी प्रसंग में फरमाया--'समणियों को तो ग्रास नहीं दिया जाता।' साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'आचार्यप्रवर नवदीक्षित समणी को कोई प्रेरणा प्रदान कराएं।' आचार्यप्रवर ने उसी समय आशु कविता के रूप में एक श्लोक फरमाया--

ओजस्वि जीवनं भूयात्, ज्ञानध्यानप्रसादतः ।
चारित्रं निर्मलं तिष्ठेत्, नाम सार्थकतां व्रजेत् ।।

साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'आचार्यप्रवर ने नई विधा में नवदीक्षित समणी को ग्रास प्रदान किया। महती कृपा कराई।' करीब ३.१० बजे चिलचिलाती धूप में आचार्यप्रवर साध्वीवृंद के प्रवास स्थल से प्रस्थान कर पुनः अपने प्रवास स्थल में पधारे।

रात्रिकालीन अर्हत वंदना से पूर्व परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुनिवृंद की ओर उन्मुख होकर कहा--'आज मध्याह्न में दीक्षा कार्यक्रम में जाने और लौटने के संदर्भ में सभी संतों को एक दिन छह विगय वर्जन से मुक्ति की बख्शीश की जा रही है।'

सिंधीकेला में भव्य स्वागत

४ मार्च। बंगोमुण्डा का द्विदिवसीय प्रवास सम्पन्न कर परम पूज्य आचार्यप्रवर आज प्रातः सिंधीकेला की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में बंगोमुण्डा के कई घरों के बाहर जैन एवं जैनेतर लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। पूज्यप्रवर के स्वागत में लोगों ने अपने-अपने घरों के बाहर रंगोलियां और कलश आदि पदार्थ सजा रखे थे। जैनेतर महिलाओं द्वारा किए जा रहे 'हुलाहुली' नाद से गांव की गलियां गुंजायमान बनी हुई थीं। पूज्यप्रवर ने मार्ग में एक जैनेतर घर में पधारकर वयोवृद्ध महिला को दर्शन दिए। आचार्यप्रवर के इस अनुग्रह से वह महिला और उनके परिजन अत्यधिक भावविभोर हो उठे। बंगोमुण्डा के सरपंच श्री सुशांत जोशी ने भी अपने घर के समीप पूज्यप्रवर को वंदन कर पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण किया। पूज्यप्रवर संबंधित लोगों की प्रार्थना पर जगन्नाथ मंदिर में पधारे और वहां मंगलपाठ का उच्चारण किया। दुर्गा मंदिर के बाहरी भाग में मंदिर प्रबन्धन से जुड़े लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया।

'कनबहाल' गांव में मार्ग से कुछ भीतर स्थित अलेख बाबा महिमा आश्रम से जुड़े लोगों ने आचार्यप्रवर को आश्रम में पधारने की प्रार्थना की। पूज्यप्रवर ने उन्हें वहीं से मंगलपाठ सुनाया। 'सालेमुडगा' गांव के लोग पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ बड़ी संख्या में खड़े थे। आचार्यप्रवर के पधारते ही ग्रामीण महिलाओं ने 'हुलाहुली' के द्वारा पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की। आचार्यप्रवर ने 'संयममय जीवन हो' गीत का आंशिक संगान

करते हुए पावन प्रतिबोध प्रदान किया। पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार बालमुनि केशीकुमारजी ने ग्रामीणों को ओड़िया भाषा में अहिंसा यात्रा के संकल्प करवाए। सिंधीकेला के बाहरी भाग में स्थित सरस्वती शिशु मंदिर के विद्यार्थियों को भी पूज्यप्रवर से पावन प्रेरणा प्राप्त हुई। आचार्यप्रवर ने 'जीवन हम आदर्श बनाएं' गीत का आंशिक संगान किया।

आचार्यप्रवर की अगवानी में सिंधीकेलावासी बड़ी संख्या में सूर्योदय से पूर्व ही पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में पहुंच गए थे। कई लोगों ने सिंधीकेला से कई किलोमीटर पहले पूज्यचरणों की अगवानी की। सिंधीकेला शहर में तो मानों जनता का ज्वार उमड़ आया। करीब अड़तालीस वर्षों बाद अपने आराध्य को अपने गांव में पाकर सिंधीकेला के श्रद्धालु अत्यंत हर्षविभोर थे। उनकी प्रसन्न मुखाकृति पर उनका आंतरिक उल्लास मुखर बना हुआ था। जैनेतर समाज में भी पूज्यप्रवर के पदार्पण से हर्षोल्लास का वातावरण था। स्थानीय विधायक श्री हाजी मोहम्मद अयूब खान और सिंधीकेला सरपंच श्री राजा थानापति ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

भव्य स्वागत जुलूस में जैन एवं जैनेतर का भेद विलुप्त प्रायः बना हुआ था। स्थान-स्थान पर रंगोलियां सजी हुई थीं और उन पर सजे हुए थे कलश, नारियल, फूल आदि लौकिक मंगल पदार्थ। यत्र-तत्र झुंड रूप में खड़ी महिलाएं 'हुलाहुली' करती हुईं पूज्यप्रवर को करबद्ध नतसिर वंदन कर रही थीं। पूज्यप्रवर दर्शनार्थियों पर आशीषवृष्टि करते हुए गतिमान थे। इस प्रकार पूरे नगर मे अलौकिक वातावरण छाया हुआ था। द्वारसैनी मंदिर से प्रारम्भ हुए भव्य स्वागत जुलूस में मारवाड़ी युवा मंच, अग्रवाल सभा, ओड़िया समाज, सत्य साईं कमेटी, जय गुरु कमेटी, नेताली क्लब, साहू संगठन, रानी झरियार कमेटी आदि समाजों व संस्थाओं के लोग सोत्साह संभागी बने हुए थे।

अनेक घरों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के बाहर उनसे संबंधित लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। पूज्यप्रवर ने अपने चरण थामकर उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान करते हुए मंगलपाठ सुनाया। करीब १४.५ कि. मी. का विहार कर परम पूज्य आचार्यप्रवर सिंधीकेला के तेरापंथ भवन में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में विनय के विकास की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन के उपरान्त लोगों को अहिंसा यात्रा की अवगति प्रदान कर अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार कराई।

कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के उद्बोधन हुए। समणी आदर्शप्रज्ञाजी ने अपने संसारपक्षीय गांव में अपने आराध्य के अभिनन्दन में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। सिंधीकेला तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री सुनील जैन, पश्चिम ओड़िशा प्रान्तीय सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री छत्रपाल जैन व तेरापंथ युवक परिषद के संगठन मंत्री श्री धीरज जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। सिंधीकेला तेरापंथ समाज के सदस्यों द्वारा स्वागत गीत का संगान किया गया। तेरापंथ कन्या मंडल ने गीत का संगान कर पूज्यचरणों का अभिनन्दन किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से श्रीचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की।

कांटाबांजी के विधायक हाजी मोहम्मद अयूब खान ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

इतना जल्दी भूल गए क्या

आज मार्ग में नागपुर से आए बालक पारस जैन अपने परिवार के साथ पूज्यप्रवर के दर्शन किए। उसके पिता उसे बता रहे थे कि 'वंदे गुरुवरम्' ये रहे। आचार्यप्रवर ने यह सुना तो उस बालक को फरमाया--'तुम तो कोलकाता आए थे ना?'

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

पारस--'हां, गुरुदेव!
आचार्यप्रवर--'इतना जल्दी हमें भूल गए क्या?'
पारस--'नहीं गुरुदेव!
आचार्यप्रवर--'तो बताओ हमारा नाम क्या है?'
पारस--'महाश्रमणजी'

छोटे से बालक पर पूज्यप्रवर की अनुग्रहवृष्टि से न केवल उसके परिजन, अपितु दर्शक और श्रोता भी अभिभूत थे।

जनकल्याण के लिए समर्पित महातपस्वी आचार्यप्रवर

२७ फरवरी। इन दिनों मार्गवर्ती गांवों में खड़ी भावाभिभूत जनता को प्रतिबोध देने आदि के कारण गन्तव्य तक पहुंचने में कुछ विलम्ब हो जाता है। धूप भी प्रायः प्रखर बन जाती है। इस संदर्भ में साध्वीवर्याजी ने गत दो दिन पूर्व पूज्यप्रवर से निवेदन किया कि आचार्यप्रवर ने गत कल की शाम को कुछ आहार किया था और आज करीब अठारह घंटों बाद कुछ ग्रहण कर रहे हैं। यह अन्तराल बहुत लंबा हो जाता है और आजकल गर्मी भी बढ़ जाती है। पूज्यप्रवर ने उस समय मुस्कान के साथ उस बात को टाल दिया।
आज आचार्यप्रवर ने साध्वीवर्याजी से पूछा--'तुम उस दिन क्या कह रही थी?'
साध्वीवर्याजी ने अपनी बात दोहराई।
आचार्यप्रवर--'मार्ग में इतने लोग खड़े रहते हैं। उन्हें कुछ धर्म की बात बताने, संकल्प करवाने आदि में कुछ समय लग जाता है।'
साध्वीवर्याजी--'इससे पूज्यप्रवर के प्रातराश में बहुत विलम्ब हो जाता है।'
आचार्यप्रवर--'अरे! इस जीव ने अनंत बार प्रातराश कर लिया होगा। प्रातराश तो थोड़ी देरी से भी हो सकता है, किन्तु उन लोगों को धर्म के विषय में सुनने-जानने का अवसर कब मिलेगा?' पूज्यप्रवर की जनकल्याण की भावना के सामने साध्वीवर्याजी सहित उपस्थित सभी व्यक्ति नतमस्तक थे।

नवघोषित चतुर्मास

१. मुनिश्री ताराचंदजी, मुनि सुमतिकुमारजी	तेरापंथ भवन, सरदारशहर
२. मुनि धर्मेशकुमारजी	सायरा
३. साध्वी चांदकुमारीजी (लाडनूं)	जोधपुर शहर
४. साध्वी प्रमोदश्रीजी	सुजानगढ़
५. साध्वी सोमलताजी	अरिहन्त बिल्डिंग, कांदीवली

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com
ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला